प्रेमचंद का साहित्य और भारतीय ज्ञान परंपरा: विकसित भारत की दृष्टि से

डॉ. शीतल आर. चौधरी,
मददनीश प्राध्यापक,एम.एन.कॉलेज, विसनगर,जिला- महेसाना, गुजरात।

Abstract (सारांश):

यह शोध पत्र हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक लेखक प्रेमचंद की रचनाओं के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा को समझने का प्रयास करता है। प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में जो सामाजिक चेतना, आर्थिक स्वावलंबन, नैतिकता और समानता के मूल्य प्रकट होते हैं, वे आज 'विकसित भारत' की दिशा में सार्थक मार्गदर्शन करते हैं। इस अध्ययन में बहुविषयक दृष्टिकोण को अपनाते हुए साहित्य, समाजशास्त्र और विकास अध्ययन के अंतर्संबंधों की पड़ताल की गई है।

Introduction (परिचय):

सतत विकास केवल पर्यावरण या अर्थव्यवस्था का विषय नहीं है, यह सामाजिक न्याय, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना का समन्वित प्रयास है। प्रेमचंद की रचनाएं - विशेषकर गोदान, कफन, निर्मला - भारतीय समाज की वास्तविकताओं को उजागर करते हुए ज्ञान परंपरा, स्वावलंबन, सह-अस्तित्व और मानवीय मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं। यह शोध उन्हीं तत्वों को 'विकसित भारत' की अवधारणा से जोड़ने का प्रयास करता है।

Literature Review (साहित्य समीक्षा):

प्रेमचंद की रचनाओं में यथार्थवाद और सामाजिक सुधार की झलक मिलती है। रामविलास शर्मा के अनुसार प्रेमचंद का साहित्य 'कर्मशील जनता की आवाज़' है। नामवर सिंह ने उन्हें 'भारतीय मध्यवर्गीय चेतना का संवाहक' कहा।

Materials and Methodology (सामग्री और कार्यविधि):

सामग्री:

प्रेमचंद की प्रमुख रचनाएँ: गोदान, कफन, सद्गति, ईदगाह आदि।
IKS से संबंधित ग्रंथ एवं समकालीन शोध लेख।

कार्यविधि:

विषयवस्तु विश्लेषण

तुलनात्मक अध्ययन

बहुविषयक विमर्श का प्रयोग (साहित्य, समाजशास्त्र, विकास अध्ययन)

Experiments or Statistical Analysis(प्रयोग/सांख्यिकीय विश्लेषण):

प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों का विश्लेषण किया गया। उनमें से 85% रचनाओं में सामाजिक असमानता, गरीबी, स्वावलंबन, नारी शिक्षा आदि मुद्दों की स्पष्ट प्रस्तुति पाई गई। 70% रचनाओं में पात्र भारतीय ग्रामीण जीवन से जुड़े हैं, जहाँ सतत जीवनशैली के संकेत मिलते हैं (जैसे कृषि, पशुपालन, सादगी आदि)।

Result and Discussion (परिणाम और चर्चा):

प्रेमचंद का साहित्य IKS का साहित्यिक प्रतिबिंब है–उनकी कहानियाँ और उपन्यास आम लोगों के अनुभवों से गढ़े गए हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं: (क) कृषि और ग्रामीण जीवन का ज्ञान - गोदान के होरी जैसे किसान चरित्र पारंपरिक कृषि-ज्ञान, ऋण-प्रणाली, और समाज में खेती के सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाते हैं। प्रेमचंद बैल, मौसम, उपज और सामाजिक भूमिकाओं का इतना सूक्ष्म चित्रण करते हैं कि वह कृषि आधारित IKS की सजीव व्याख्या बन जाता है। उदाहरण: होरी का सपना कि वह एक गाय दान कर सके – यह धर्म, परंपरा, और सामाजिक प्रतिष्ठा का मिश्रण है, जो IKS के धार्मिक व नैतिक पहलुओं से जुड़ा है। होरी की खेती मौसम, मृदा और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है – यह आधुनिक कृषि विज्ञान से भिन्न लेकिन अनुभव-सिद्ध प्रणाली है। 'रंगभूमि' का लोक-नायक 'सुजान' के माध्यम से प्रकृति-रक्षा, आत्मनिर्भरता और सत्याग्रह की भावना

(ख) नैतिक मूल्य और सामाजिक न्याय - पंच परमेश्वर, सद्गति

'पंच परमेश्वर' में पंचायत की न्याय-व्यवस्था और 'धर्म' के विवेक का वर्णन भारत की स्थानीय न्याय प्रणाली (IKS का एक पहलू) को दर्शाता है। जुम्मन जैसे

व्यक्ति न्याय के समय धर्म और दोस्ती में से धर्म चुनता है। 'सद्गति' में सामाजिक पाखंड और जाति आधारित अन्याय की आलोचना की गई है, जो सामाजिक संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करती है। 'नमक का दारोगा' में 'दरोगा के सामने जब भ्रष्टाचार और ईमानदारी के बीच चुनाव की घड़ी आती है, वह अपने अंतःकरण की आवाज को चुनता है। यह IKS के 'धर्म' की आधुनिक व्याख्या है।

(ग) संस्कार और लोकपरंपरा - ईदगाह में बालक हमीद की कहानी त्याग, सेवा और परिवार जैसे संस्कारों पर आधारित है–IKS में ये भाव शिक्षा और जीवन-दर्शन के मूल हैं। 'दूध का दाम' में भूंगी बिना स्वार्थ के सेवा करने वाला चरित्र, ग्रामीण जीवन की सहजीविता और लोकहित परंपरा को दर्शाता है। 'आत्माराम' कहानी में दिखावे से परे जीवन जीने की कला - भारतीय संत परंपरा, तपस्विता और लोकसेवा के आदर्शों को दर्शाता है।

(घ) स्त्री और समाज - सेवासदन, निर्मला प्रेमचंद की नारी पात्रों में पारंपरिक चेतना और आधुनिक सोच का मिश्रण मिलता है। IKS स्त्री को केवल 'गृहिणी' नहीं, संस्कार वाहिका और समाज का आधार मानती है, जो इन रचनाओं में झलकता है। उदाहरण: 'सेवासदन' में सुमन का चरित्र उस स्त्री का प्रतीक है जो पितृसत्तात्मक समाज में संस्कारों और नैतिक संघर्षों के बीच जूझती है। 'प्रतिज्ञा' एक विधवा के साथ विवाह की पहल - प्रेमचंद सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध खड़े होते हैं, जो IKS का आत्म-सुधारक पक्ष है। गोदान में किसान की भूमि से जुड़ी जीवन दृष्टि। ईदगाह जैसी कहानियों में पारिवारिक मूल्य और करुणा जैसे मानवीय भाव विकास की नई परिभाषा देते हैं। बहुविषयक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के साहित्य में आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक विषय एक साथ उपस्थित हैं -जो समग्र विकास की धारणा को सुदृढ़ करते हैं।

आधुनिक मूल्य प्रेमचंद का दृष्टिकोण IKS में संबंध में बहुत महत्व पूर्ण है।

सतत विकास प्रकृति और श्रम के प्रति संवेदनशीलता पर्यावरण आधारित जीवन दृष्टिसामाजिक न्याय वर्ण और वर्ग से ऊपर मानवता सर्वजन हिताय, लोकमंगल दृष्टिकोण आत्मनिर्भरता श्रम, ईमानदारी, स्वावलंबन 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' की अवधारणा

Conclusion (निष्कर्ष):

प्रेमचंद का साहित्य केवल कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज का दार्शनिक दस्तावेज है। इसमें सतत विकास के वे सभी मूल तत्त्व विद्यमान हैं, जो आज के भारत को "विकसित भारत" की ओर ले जाने में सक्षम हैं - जैसे नैतिकता, न्याय, समानता, शिक्षा और प्रकृति के प्रति संतुलन। उनके साहित्य को बहुविषयक दृष्टि से पढ़ना और नीति-निर्माण से जोड़ना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

References (संदर्भ):

1. प्रेमचंद - गोदान, कफन, सद्गति, ईदगाह....आदि।
2. शर्मा, रामविलास (1981). प्रेमचंद और भारतीय समाज
3. सिंह, नामवर (2005). हिंदी के विकास में प्रेमचंद की भूमिका
4. Mishra, K.C. (2020). Sustainable Values in Ancient Indian Literature
5. UNESCO (2020). Indian Knowledge Systems and Cultural Continuity
6. IGNOU. हिंदी साहित्य और समाजशास्त्र पाठ्यक्रम सामग्री